218 P
H 17
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1310/10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 218

218

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

* बन्देमातरम् *

आजादी का बम।

अधीन होकर बुरा है जीना,
मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
सुधा को तजकर गरल का प्याला,
पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर।

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—
जगन्नाथ प्रसाद अरोड़ा,
बनारस सिटी।

प्रथम संस्करण] सन् १९३० ई० [मूल्य -)
सैकड़ा ३=)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 218
Date 4.12.71

आजादी का बम

बेदुम के बन्दर ।

अब तो बेदुम के बंदर भगाये जायँगे ।
उनकी शेखी व शान घटाये जायँगे ॥
हिन्द आज़ाद करेंगे ये हमने ठाना है ।
सत्याग्रह व अहिंसा को शस्त्र माना है ॥

बंदर घुड़की से हम न डराये जायँगे—

जेल दे दीजै जरा भ है नहीं कुछ ग़म मुझे ।
कृष्ण की जन्मभूमि तीर्थ से न कम है मुझे ॥

बेड़ी चक्की से हम न डराये जायँगे—

कैद मोती व सेन गुप्त जवाहर को किया ।
हमारे गांधी को तुमने है नज़र बंद किया ।

अब तो घर २ में गांधी बनाये जायँगे—

काले पानी से हमको न तुम डरावोगे ।
गोली की धमकी से न हम को हटा पावोगे ॥

संमुख तोपों के सीने अड़ाये जायँगे—

जेल में गीत जब तसले को बजा गायेंगे ।
शर्म्मा दुश्मन के दिलों को तभी दहलायेंगे ॥

बंदे मातरम् के नारे लगाये जायँगे—
अब तो बेदुम के बन्दर भगाये जायेंगे ॥

अश्कबार होंगे ।

जो वक्त शिकवा खुदा से महशर
में रोके हम अश्कबार होंगे ।
तो सुन के भारत की दुर्दशाओं
को रंज परवरदिगार होंगे ॥
करोगे फरियाद कैसे रो कर
खुदा के हमशर बरोजे महशर ।
ये चन्द कतरे भी आँसुओं के
न मिलने वाले उधार होंगे ॥
महात्मा जी को कैद रखने से
आन्दोलन न दब सकेगा ।
अभी तो तैंतिस करोड़ गान्धी
हम हिन्द में आशकार होंगे ॥
हजारों मोती के होंगे जौहर
औ लाखों होंगे जमा जवाहर ।
औ मरने वाले वतन पै अपने
करोड़ों क्या बेशुमार होंगे ॥
तुम्हारे तोरे सितम को मेहमाँ
बना के दिल में जो रख रहे हैं ।

ये मेरी आहों में होके शामिल
तुम्हारे सीने में पार होंगे ॥

गजब में आकर न बदलो तेवर,
चला के खंजर भी आजमा लो।
कसम खुदा की ये सच ही मानो
जरा न हम बेकरार होंगे ॥

जो कत्ल करने की है तमन्ना
तो ये भी दिल में ख्याल रखना।
हमारे खूँ के हरएक कतरे
स्वराजे उम्मीदवार होंगे ॥

हमारे भारत के बच्चे बच्चे
बढ़ा के उत्साह कह रहे हैं।
कि हिन्द माता के कदमों में सर
चढ़ा के हम जाँनिसार होंगे ॥

जो छोटे बच्चों के नर्म दिल में
भी गोलियों को चुभा रहे हो।
तुम्हारे सीने में चुभने वाले
हजारों बिच्छू के आर होंगे ॥

बने हैं जाँबाज हम भी 'शायक'
व वक्ते ज़िबहः भी देख लेना।
कि जेरे खंजर की जानशीनों
के सर ये बीसों हजार होंगे ॥

जालिम सता रहे हैं।

हमारे खूं से बने हैं गोरे हमीं को काला बता रहे है।
हमीं से पैसा वसूल करके हमीं को जालिम सता रहे हैं॥
यहाँ पै आके किया तिजारत जमाया हिन्दोस्ताँ पै सिक्का।
तबाह कर दीन दुखिया भारत ये अपना शासन जमा रहे हैं॥
ये दीन भारत के भूखे बच्चे हैं भूखे मरते रुदन मचाते।
औ देखो लंदन के हैं बकिन्दे जो चाय बिस्कुट उड़ा रहे हैं॥
गुलामी से देख हिन्द जकड़ा बजाया मोहन ने शंख आला।
जो लाल भारत के सो रहे थे उन्हें तो गांधी जगा रहे हैं॥
कुछ भी दिल में रहम तो लाओ सताना अच्छा न बेकसों का।
तू क्यों न खाता है खौफ उनका जो सारी दुनियाँ चला रहे हैं॥
जो तुम चलाओगे गन मशीनें तो हम भी सीना अड़ाय देंगे।
भगायेंगे हम तुम्हें भी लंदन ये सत्य बानी सुना रहे हैं॥
बनायेंगे हम अनोखा जगी अनोखा ये जंग मचा मचा कर।
निशस्त्र होकर भी 'भीम' ऐसी ये गर्जना हम सुना रहे हैं॥

चर्खे पर बन्दर।

अब तो चर्खे पर बन्दर नचाये जायेंगे।
तकली प्यूनी से लंडन भगाये जायेंगे॥
लंडन की बनी मखमली सारी व लंकलाट।
साटन गिरंट डोरियों का कर दो बायकाट॥
कपड़े सारे विदेशी जलाये जायेंगे॥

बंडी के लिये छींट न हर्गिज रँगाओ तुम।
उसकी जगह पै शुद्ध खद्दर ही मँगाओ तुम॥
अब तो भारत के पैसे बचाये जायेंगे॥

काकोरी के शहीद।

थे शेर जग आजादी में काकोरी के शहीद।
फाँसी पर गये झूल थे काकोरी के शहीद॥
जाता था ट्रेन में जो सरकारी खजाना।
डाला था डाका ट्रेन में काकोरी के शहीद॥
नाना व धूधू पंत का खाका था लिया खींच।
वीरों में दिलावर थे काकोरी के शहीद॥
शाहजहांपुर रहते थे अशफाक उल्ला खाँ।
बिसमिल राम प्रसाद हुये काकोरी के शहीद।
काशी के जीतेन्द्र लाहिड़ी व बक्शी जी भी थे।
आजन्म काला पानी गये काकोरी के शहीद॥
स्वतंत्रता के पागल थे वे संगे दिल मजबूत।
करते थे क्रान्ति जोरों में ककोरी के शहीद॥

चलाओ चर्खा।

निकालो थोड़ा सा वक्त अपना,
चलाओ चर्खा चलाओ चर्खा।
जो और थोड़ा सा वक्त पाओ,
तो बीनो कपड़ा चलाओ चर्खा॥

जो चाहते हो निजात अपनी,
तो पहनो अपने गले में कफ़नी।
उठो करो देश की भलाई,
जो सीखे उसको सिखाओ चर्ख़ा॥

डरें न योरप के गन से दम भर,
पुकार दो आज जाके घर-घर।
मशीनगन जो तुम्हें दिखाये,
उसे तुम अपना दिखाओ चर्ख़ा॥

यह विष्णु का चक्र है सुदर्शन,
कभी न इसको ज़लील समझो।
जो चर्ख़े इक़बाल पर हो जाना,
तो पहले घर में चलाओ चर्ख़ा॥

पड़ा है योरप में ज़लज़ला सा,
कि हाय सारा तिलिस्म टूटा।
यह किसने कानों में आके फूँका,
ज़ुबाँ को रोको चलाओ चर्ख़ा॥

अगर गुलामी से छूटना हो,
स्वराज की दिल में हो तमन्ना।
तो खाके मोटा पहन के खद्दर,
घरों में बैठे चलाओ चर्ख़ा॥

सुना है दाना भी घर में बैठे,
चलाया करते हैं अपना चर्ख़ा।

तो तुमको अब उज्र क्या है बाकी,
बस आओ आओ चलाओ चर्ख़ा ॥

देश-भक्त का प्रलाप ।

हमारा हक़ है, हमारी दौलत, किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी के ख़ाला का घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर-अमर है, निसार तन-मन स्वदेश पर ।
हैं चीज़ क्या जेलो गन मशीनें, क़ज़ा का भी हमको डर नहीं है॥
ब देश का जिसमें प्रेम होवे, दुखी के दुख से जो दिल न रोवे।
खुशामदी बनके शान खोवे, वो ख़र है, हरगिज बशर नहीं है।
हुकुक़ अपने ही चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ खुदग़रज, किसी की भलाई मद्दे-नज़र नहीं है॥
हमारी नस-नस का खून तूने, बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा।
है कौन-सी तेरी पालसी वह कि जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥
बहाया तूने है खूँ उसी का, है तेरे रग-रग में अन्न जिसका।
बता दे बेदर्द, तू हो हक़ से, सितम है ये या क़हर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े-बड़े मिट गए सितमगर, क्या इसकी तुझको ख़बर नहीं है॥
सँभल-सँभल अब भी ओ लुटेरे, है तेरे पापों का अंत आया।
कि जुल्म करने में तूने ज़ालिम, ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है॥
ग़ज़ब है हम बेकसों की आहें, जमीन औ आसमाँ हिला दें।
ग़लत है सबके 'कमल' जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है॥

सता रहे हैं।

इलाही तुम भी खयाल रखना गवाह तुमको बना रहे हैं।
हम हिन्दवालों को पाके दुर्बल वो हर तरह से सता रहे हैं॥
सुना है फरियाद पर वो मेरे गजब के तीवर चढ़ा रहे हैं।
तो सर कटाने की आर्जू में हम आज मकतल में जा रहे हैं॥
अजब है उत्साह सबके दिल में कि लोग जेलों में जा रहे है।
जो कल थे मखमल पै सोनेवाले वो आज कंबल बिछा रहे हैं॥
हम हिन्द मा का ऋण चुकाने को खून अपना बहा रहे हैं।
मगर उन्हें क्या जवाब होगा जो हम पै गोली चला रहे हैं॥
हम हिन्द माता के हैं ऐसे बच्चे जो जान अपनी लड़ा रहे हैं।
और एक भारत सपूत वो हैं जो पेश डंडों से आ रहे हैं॥
जो मेरे महफिल के बामुकाबिल वो गन मशीनें लगा रहे हैं।
तो हम भी आहों की ताकतों से उन्हीं की हस्ती मिटा रहे हैं॥
फलक के नीचे से हट वो जायें अभी से उनको चेता रहे हैं।
हम अपनी आहों से इस समय आस्माँको भी डगमगा रहे हैं॥
जो मिल के तैंतिस करोड़ भारत में आहो गिरियाँ मचा रहे हैं।
थो रोजे महशर को सोते फितनों को आज ही से जगा रहे हैं॥
शमा की सूरत में दिल जला कर वो लेके गुलगीर आ रहे हैं।
जो हिंद के हैं चिरागे रोशन विचारे सर को कटा रहे हैं॥
वो जोश खाकर दमन को अपने जो चक्र अजहद चला रहे है।
तो अहले 'शायक' स्वतंत्रताके खुद अपने सरको झुका रहे हैं॥

——:——

महात्मा गांधी की ११ शर्तें

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुम्हें भी साहब ! सर अपना अब तो झुकाना होगा॥

१ नशीली चीजें शराब, गाँजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इनकी खरीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥

२ हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा बढ़ा करके लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा॥

३ लगान आधा करो जमीं का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों।
हुकमा इसका हमारी कौंसिलके ताबे तुमको रखाना होगा॥

४ फिजूल-खर्ची, बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब घटाना होगा॥

५ बड़े-बड़े भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफसर।
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा॥

६ स्वदेशी कपड़े करे तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावे।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा॥

७ समुद्र तट का जहाज़ी वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के, अधीन रखकर चलाना होगा॥

८ जिन्हें क़तल या क़तल इरादा, सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ो।
बक़ाया क़ैदी पोलिटिकल सब, तुरन्त साहब ! छुड़ाना होगा॥

९ उठा लिये जायँ राजनैतिक, जो मामले चल रहे मुलक पर।
जो इकसौचौबिसदफा अलिफ है, उसेतोबिलकुलमिटानाहोगा॥

१० अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन तथा दफा ऐसी सब उठाकर।

हमारे भाई जो निर्बसित हैं, उन्हें वतन में बुलाना होगा ॥
११ मुहकमा खुफिया-पुलिस उठा दो या करदो उसको प्रजाकेताबे।
हमें भी बंदूक और पिस्तौल बराय हिफाजत दिलाना होगा ॥

तारों में।

आजादी की झंकार मोहनी गूँज रही है तारों में।
है कैसा जादू भरा हुआ खादी के मोटे तारों में ॥
सब से पहले झंकारों ने मन मोह लिया था मोहन का।
चितरंजन का चित बना दास तब निकला यह अखबारों में ॥
हो गया नेह नेहरू का जो पेरिस से वस्त्र धुलाते थे।
बँध गये सदा के लिये देश के भक्त सभी इन तारों में ॥
मिट गये विकार उन अंगों के जो खादी के अंगे पहिन लिये।
सर फूटा गोली लगी हुये विचलित नहीं अत्याचारों में ॥
तप अत्याचार अमल में उनकी दमक नहीं घटने पाई।
क्या पारस बिकने लगा आज खादी बनकर बाजारों में ॥
खादी के नीरस तारों में है देश-प्रेम-जल उमड़ पड़ा।
मुर्दा भारत जी उठा न जल है सुधा भरा इन तारों में ॥
है तार नहीं किरण है उज्ज्वल स्वतंत्रता के रवि का।
है देश-भक्त-हिय-कमल खिलाने की ताकत इन तारों में ॥
कानून-कुमुद मुद गये पुलिस ने खुद इनको ठुकराया है।
निकलें जनानखानों से हिम्मत कब उलूक मक्कारों में ॥

—:—

लाल मुरेठा वालों ने ।

भारत को गारद कर डाला इन लाल मुरेठा वालों ने ।
हम सब की शान मिटा डाला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥
जिस कुल में जन्म लिया इनने उनही के सर डंडे मारे ।
जैचन्द सरिस कुल दल डाला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥
जिस दम ये लख पाते हैं गोरों का बागी है कोई ।
बस चट जेलों में भर डाला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥
जब गोरे बिल रंखो का जिस दम ये इशारा पाते हैं ।
गोली से घायल कर डाला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥
गोली और तोप मशीनों से भाई का खून बहाते हैं ।
कुछ भी न तरस दिल में घाला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥
भारत में पैदा हो करके भाई पै जुल्म मचाते हैं ।
कर दिया मातु का मुँह काला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥
अब 'शर्म्मा' भाइयो छोड़ गुलामी हममें 'आ' आजाद बनो ।
नहिं सुना जरा या हकताला इन लाल मुरेठा वालों ने ॥

स्वतन्त्र भारत ।

अहाहा मोहन के मुँह से निकला, स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।
सुना सभी ने सचेत हो कर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
विशाल लवपुर के लाखों दल में, महासभा के वितान-तल में ।
कहा ये गाँधी ने रावी-तट पर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
समय था उन्तीस सन् का आख़िर, प्रमत्त थे राज-मद में शासक ।
सुनाया गांधी ने तब गरजकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥

समीर में, नीर में, गगन में, वचन में, तन में, हरेक मन में ।
समा गया वह महा मधुर स्वर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
हरेक घर में मची हुई है स्वतंत्रता की अजीब हलचल ।
ये कहते बच्चे गोहार कर कर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
स्वतंत्रता के लिये सभी के, दिलों में जलती है आग भारी ।
हैं देखते स्वप्न में भी पड़कर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
बनाए कुटिया स्वतंत्रता की, सपूत जेलों में रम रहे हैं ।
तपस्वी देखेंगे अब निकलकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक लों, बजेगा डंका स्वतंत्रता का ।
कहेंगे तैंतिस करोड़ मिलकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
उड़ेगा भूतल पै सबसे ऊँचा, विशाल झंडा स्वतंत्रता का ।
कहेंगे नर-नारि जगके लखकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥
रहा हमेशा स्वतंत्र भारत; रहेगा फिर भी स्वतंत्र भारत ।
'प्रकाश' बाँटेगा विश्व को फिर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत ॥

वीर जवाहर ने ।

भारत का डंका आलम में, बजवाया वीर जवाहर ने
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने ॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का ।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहर ने ॥
अँगरेज़ों की मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब ।
पूरी आज़ादी का मन्तर, सिखलाया वीर जवाहर ने ॥
दे दे स्पीचें ज़िन्दा-दिल, कमज़ोरी दूर भगा दी सब ।

रग-रग में खूं आज़ादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने ॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है ख़ाक विदेशों की ।
समता स्वतंत्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने ॥
तूँजीपति ज़मींदार करते हैं, जुल्म मजूर "किसानों पर ।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने ॥
हिन्दू, मुसलिम, सिख, जैन, ईसाई पार्सी भाई-भाई हैं ।
सब ऊँच-नीच का भेद-भाव, मिटवाया वीर जवाहर ने ॥
इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी की उसके दिल में ।
जिससे युवकों का सुर्ख-दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग-विलासों में ।
युवकों की शक्ती को एकदम, उसकाया वीर जवाहर ने ॥
आदर्श-चरित्र से वह अपने, युवकों का है सम्राट् बना ।
आज़ादी का ऊँचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने ॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आँखों में उसकी ।
देखा जिसको इक पल-भर में, अपनाया वीर जवाहर ने ॥
गांधी जब आशिष दे बोले—"खुद कलर्क बनूँगा मैं तेरा" ।
तब सेहरा राष्ट्रपती का सिर, बँधवाया वीर जवाहर ने ॥
लखकर "प्रकाश" अब भारत को, अचरज में डूबी है दुनिया ।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, मुसकाया वीर जवाहर ने ॥

समाप्त ।

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—
"लक्ष्मी-प्रेस" नीलकण्ठ, बनारस में मुद्रित।